डॉ. रंजित एम.

जन्म : 29.01-1977, तलश्शेरी, कण्णूर (जिला), केरल

पिता : सी. एम. माधवन

माता : के. के. पद्मजा

पत्नी : डॉ. सूर्या बोस

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी), एम.फिल (हिन्दी), (कालिकट वि. वि.), बी.एड. (कण्णूर वि. वि.), पी. जी. डिप्लोमा इन ट्रांसलेशन (कालिकट वि. वि.), डिप्लोमा इन हिन्दी (केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली), राष्ट्रभाषा प्रवीण (दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास), एल. टी.टी. (केरल सरकार), पी-एच.डी. (कालिकट वि. वि.)

प्रकाशन : 1. अज्ञेय के तारसप्तक
2. प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कविता, कहानी, लेख, यात्रावृत्त

सम्प्रति : अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, एम.ई.एस. अस्मावी कॉलेज, कोडुङ्गल्लूर, त्रशूर (जिला), केरल

ISBN : 978-81-8111-197-5

© डॉ.रंजित.एम.

प्रकाशक : गोविन्द पचौरी
जवाहर पुस्तकालय
हिन्दी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक
सदर बाजार, मथुरा (उ.प्र.)-281001
दूरभाष : (मो.) 09897000951
ई-मेल : jawahar.pustakalaya@gmail.com
संस्करण : सन् 2011
मूल्य : 400/- रुपये
शब्दांकन : गौरव ग्राफिक्स, मो. 09873991984
मुद्रक : रुचिका प्रिंटर्स, दिल्ली-110032

शुभाशंसा

परमतत्त्व तक पहुँचने की सीढ़ी को सामान्य मानव की समझ रखकर समझानेवाले साधक थे, सूफी। मानव प्रेम के माध्यम से तक पहुँचने का मार्ग खोलना ही सूफियों का कार्य था। उनके पर चिन्तन करना सर्वथा अनिवार्य है। इस तरह के चिन्तन से व्यि सशक्त दृष्टिकोण प्राप्त होता है।

सूफी साहित्य महज कल्पना या कोरी भावुकता पर अधिष्ठि यह तत्त्वज्ञान की विराट पृष्ठभूमि पर विराजमान सत्ता है। मानव सर्वतोन्मुखी दृष्टि न रचनाओं में सहज सुलभता से प्राप्त होते हैं। स ईश्वरीय तत्त्व भी इन कृतियों का अहम हिस्सा है। अतः सूफी अपनी गरिमा है। इसे अनदेखा छोड़ना मानवराशी की ओर से मुख

'हिन्दी सूफी काव्यों में समाजदर्शन' नामक यह कृति सूफी ओर मुख करके रखा हुआ एक दर्पण है; जिसमें हमें सूफी साहित्य रू के साथ-साथ साहित्य रूपी मोतियों के साथ-साथ हिन्दु तथा इस्लाम समाजशास्त्र रूपी हीरे भी प्राप्त होते हैं। ज़िन्दगी के सफर में महत्व हीरे-मोतियों को पाठकों के समक्ष रखने की रंजित की कोशिश सराह मेरी शुभकामनाएँ।

डॉ.क
भूतपूर्व
हिन्दी
कालिकट

हिन्दी सूफ़ी काव्यों में समाज दर्शन

डॉ. रंजित एम.